वंदे मातरम्
राष्ट्र सेविका समिति
:: प्रधान कार्यालय ::
देवी अहल्या मंदिर, धंतोली, नागपूर - 440012
दूरभाष : 0712-2442097 फॅक्स : 0712-2423852

वार्ता

वर्ष : 21 अंक : 54 युगाब्द 5119 दिनांक : 04.12.2017

भगिनी निवेदिता सार्धशती वर्ष

हे राष्ट्रहित निवेदित सुमन
शत्-शत् नमन शत्-शत् नमन्...

:: भगिनी निवेदिता सार्धशती कार्यक्रम ::

जम्मू-काश्मीर प्रांत -

राष्ट्र सेविका समिति द्वारा भगिनी निवेदिता सार्धशति के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम बुधवार दिनांक 01.11.17 को कारगिल सभागार वेद मंदिर जम्मू में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की प्रमुख वक्ता अ. भारतीय प्रमुख कार्यवाहिका मा. सीता गायत्री जी तथा मुख्य अध्यक्षा दीवान बद्रीनाथ हायर सेकेण्डरी स्कूल अमर विल्ला जम्मू की प्रधानाचार्या सुश्री परवीना झा रही। इस कार्यक्रम में जम्मू महानगर के विभिन्न स्थानों से लगभग 60 महिलाओं ने भाग लिया, जिनमें से विभिन्न स्कूलों से आई तेरह अध्यापिकाओं ने भगिनी निवेदिता के जीवन पर प्रकाश डाला। चर्चा का विषय था ''राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारियां'' सबने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

छत्तीसगढ़ प्रांत -

छत्तीसगढ़ प्रांत में 2 स्थानों पर हुआ। रायपुर में महाराजा अग्रसेन कॉलेज में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षा कॉलेज की सहप्राचार्या श्रीमती ज्योति जनस्वामी एवं प्रमुख वक्ता अ.भा.सहकार्यवाहिका मा. सुलभा देशपाण्डे एवं शताब्दी पाण्डे विशेष आमंत्रित के रूप में थी। पूरा कार्यक्रम छत्तीसगढ़ की प्रांत कार्यवाहिका मा. सौ. प्राजक्ता देशमुख के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। लगभग 200 कॉलेज की छात्राओं की उपस्थिति में मा. सुलभा ताई जी ने भगिनी निवेदिता के जीवन के प्रेरणादाई प्रसंग बताए। चांपा में भी एक प्रदर्शनी निवेदिता के जीवन पर लगाई गई एवं जीवन चरित्र बताया गया।

आसाम प्रांत -

राष्ट्र सेविका समिति गुवाहाटी में बी. ब्रहन केंसर इंस्टीट्यूट में हॉस्पिटल के स्टॉफ के सहयोग से 200 रोगियों को फल वितरित किये तथा उनके शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामनाएं दी तथा दूसरे दिन रविवार को वं. लक्ष्मी बाई केळकर समिति की ओर से रमदिया (हॉजी) में मेडिकल कैम्प ''हेल्थ अवेयरनेस कैम्प'' लगाया। 200 रोगियों का डाईबिटिज रोग का परीक्षण किया गया। डॉक्टर्स एवं नर्स की सहायता से कैम्प सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत -

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत में भागिनी निवेदिता सार्धशती समारोह के उपलक्ष्य में सातारा जिले में दो स्थानों पर युवती सम्मेलन तथा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वाई के कन्याशाला में युवती सम्मेलन संपन्न हुआ। जिसमें 160 कन्याएं सहभागी हुई। इसके अंतर्गत भगिनी निवेदिता जी के जीवन पर आधारित निबंध प्रतियोगिता तथा उनके रेखाचित्र बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई। ''स्वदेशी जीवन शैली तथा विदेशी वस्तुओं पर बहिष्कार'' इस विषय पर व्याख्यान हुआ।

कहाड में 200 महाविद्यालयीन तरूणियों ने दिन भर के कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें व्यायाम, खेल, पद्य, चर्चा सत्र आदि हुए। निवेदिता के जीवन पर आधारित प्रसंगों का कथन किया गया। इस अवसर पर वारली पेंटिंग की कार्यशाला भी आयोजित की गई।
सातारा की सेविकाएं तथा विवेकानंद केन्द्र के प्रयत्न से कार्यक्रम सफल हुआ।

महाकौशल प्रांत -

जबलपुर महानगर में भी भगिनी निवेदिता सार्धशती के उपलक्ष्य में 28 अक्टूबर को विभिन्न स्कूल व कॉलेजों के कुल 18 स्थानों पर कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्तिक पूर्णिमा के इस अवसर पर प्रांत के 8 स्थानों में दीपदान के साथ भारत माता की आरती का कार्यक्रम बहनों के बीच लिया गया। महाकौशल प्रांत के सिवनी जिले को कार्यालय प्राप्त हुआ। जिसका उद्घाटन प्रमुख संचालिका वं.शांताक्का जी व चित्राजी के हाथों हुआ।

मुख्य शिक्षिका शाखा कार्यवाहिका अभ्यास वर्ग प्रांत के 4 विभागों का 4 स्थानों में संपन्न हुआ। जबलपुर विभाग के अभ्यास वर्ग में मा. शैलाताई जी (अखिल भारतीय अधिकारी) का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

राष्ट्र सेविका समिति

प्रतिष्ठान संकुल बैठक-2017

मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी
युगाब्ध 5119

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष षष्ठी तद्नुसार दिनांक 25 नवम्बर 2017 को अखिल भारतीय प्रतिष्ठान संकुल बैठक का उद्घाटन सत्र प्रातः 10 बजे वं. शांताक्का, मा. चित्राताई, मा. संध्या टिपरे, मा. सीताजी के द्वारा दीप प्रज्जवलन एवं पुष्पार्चन से प्रारंभ हुआ। परम्परानुसार सर्वप्रथम हमारी सेविका बहनें जो आज हमारे बीच नहीं है उन्हें श्रद्धांजली देते हुए मा. चित्रताई जी जोशी ने कहा कि जिस प्रकार शिशिर ऋतु में वृक्ष के नीचे पत्ते झड़ जाते हैं उसी प्रकार इस वर्ष हमारी मातृवत सेविकाएं ब्रम्ह विलीन हुई मा. सुनीताताई जी जोशी, वं. उषाताई जी, मा. प्रतिभाताई भावे, मा. शकुनताई वराडपाण्डे, मा. सौभाग्यलक्ष्मी आगाशे, मा. प्रतिभाताई कुकड़े, मा. सुप्रिया नाफड़े, मा. नीलिमा कानिटकर, मा. सरला ताई गायधनी, मा. कालिन्दीताई गाडगीळ, मा. सुमनताई जी सरनाईक इन सभी को हम सभी प्रतिष्ठान की बहनें अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं।

वर्ष 2016 पिछली बैठक का वृत्त निवेदन सौ. राधा गोखले द्वारा किया गया। सभा ने ॐकार ध्वनि से अनुमोदित किया।

सत्र-2 सायं चर्चा सत्र संपन्न हुआ। **विषय-समाज की वर्तमान स्थिति**

समस्या : इस विषय पर निम्न बिंदु उभर कर आये-

1. घर की महिला का कर्तव्यों के प्रति सजग न होना। 2. मूल्य रहित शिक्षा 3. डबल इन्कम नो चिल्ड्रन, 4. बुद्धिमान बच्चे की संख्या कम 5. अत्याधिक सुविधा के कारण प्रतिरोध क्षमता कम 6. धीरज की कमी 7. सामाजिक संतुलन ग्रामीण व छोटे शहरों में माँ-बाप (बुढ़े) की संख्या ज्यादा एवं मेट्रो सिटी में युवाओं की भीड़ 8. पारिवारिक रिश्ते खत्म हो रहे हैं। 9. पारिवारिक विघटन 10. सामाजिक परिस्थिति असहिष्णु, प्रतिगामी या पुरोगामी वृत्ति, शैक्षिक स्थिति केवल अक्षर ज्ञान तक सीमित, व्यावहारिक स्थिति में तुष्टिकरण नीति, राष्ट्रीय दृष्टिकोण, भारत व अन्य देशों की तुलना केवल आर्थिक दृष्टिकोण एवं सुख सुविधाओं की दृष्टि से।

हमारी भूमिका :

समुपदेशन होना चाहिए, परिवार में बच्चों को संस्कारित करने के लिए समय देना। समाज में परिवर्तन लाना है तो प्रथम घर में परिवर्तन की आवश्यकता, फिर समाज व राष्ट्र में। परिवार संकल्पना को दूर करना, अपना, अपने कार्य का प्रभाव घर व समाज पर डालना है हमें एक नीति के रूप में कार्य करना है देश रक्षा परमपुण्यं यह भाव मन में रखकर एक जागरूक प्रहरी की तरह समाज में विचरण करना। परिवार व्यवस्था एवं विवाह संस्था के साथ प्रत्येक नागरिक की समाज के साथ प्रतिबद्धता पर अगले पीढ़ी में विश्वास पैदा करना ऐसा निष्कर्ष निकालकर मा. सीताजी ने चर्चा का समापन किया।

प्रथम सत्र -1 जी.एस.टी. क्या और कैसे, इस विषय पर सौ. माणिकताई, उपाध्यक्ष नाशिक ट्रस्ट एवं विभाग बौद्धिक कार्यवाहिका द्वारा प्रेजेंटेशन द्वारा विस्तृत जानकारी दी एवं प्रतिष्ठानों को इस विषय पर जागरूक रहने की सलाह दी एवं शंका समाधान किया गया।

सत्र-2 प्रतिष्ठानों में कार्यालय संबंधी आवश्यकता कम्प्यूटर, प्रिंटर की उपलब्धता, प्रतिवर्ष सर्वसाधारण सभा 30 सितम्बर के पूर्व हो। ऑडिट अप्रैल में ही करवाना जिससे आमसभा में वह अनुमोदित हो, स्टॉक बुक बनाना एवं प्रतिवर्ष उसे स्वीकृत करना और यदि नहीं हो तब 2015 से बनाना। पुरानी प्रस्ताव पंजी सम्हालकर रखना, कार्यकारिणी रजिस्ट्रार ऑफिस से अनुमोदित हो। टीडीएस के लिये जागरूक रहें एवं हमारा काम पारदर्शी हो। जितना हो सके भुगतान चेक से करें। ऑनलाइन काम करना सीखना है ऐसा मार्गदर्शन मा. चित्राताई जोशी ने किया।

सत्र-3 श्री मा. अजित महापात्र, प्रचारक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भूतपूर्व सेवा प्रमुख एवं अ.भा.गोरक्षा प्रमुख द्वारा सेवाकार्य, हमारा दायित्व व क्षमता इस पर चर्चा की एवं मार्गदर्शन दिया।

सत्र-4 दिनांक 25 को हुई कार्यशाला के संकलन का प्रस्तुतिकरण, परिसंवाद व प्रश्नमंच का नियोजन, वार्षिकोत्सव नियोजन, सामाजिक समरसता, मीडिया प्रचार एंव प्रसार।

समापन : वं. शांताक्का का पाथेय-

वं. शांताक्का ने जो पाथेय प्रतिष्ठानों को दिया उसका संक्षिप्त सार -

1. आज संविधान दिवस है अतः सभी प्रतिष्ठानों ने प्रतिवर्ष सामूहिक रूप से उनका वाचन करना एंव वह धर्म व संस्कृति पर आधारित है इस पर चिंतन करना, संविधान के उद्देश्य को पूरा करने के लिये प्रयत्नशील रहना। नरसी मेहता जयंति है, समरसता का पाठ पढ़ाने वाले संत सबसे एकत्व भाव रखना, यह हमारी विशेषता, प्रतिष्ठान का कार्य मन से करना, समर्पण की मनोवृत्ति से कार्य करना। आगामी योजनाएं बनती है तो उसके अनुसार प्रतिष्ठान में उसे क्रियान्वित करने की आवश्यकता एवं सकारात्मक भाव से कार्य करना ऐसा विश्वास की अपेक्षा से समापन किया।

ॐ विजयादशमी वृत्त

केन्द्र कार्यालय-नागपूर

आज अपने देश और समाज के प्रति अपनत्व भाव कम हो रहा है। यह जिम्मेदारी सिर्फ सरकार या शासन की नहीं है, यह तो प्रत्येक नागरिक की है। यह जिम्मेदारी की भूमिका न निभाने के कारण उसके दुष्परिणाम दिखाई दे रहे हैं, ऐसे में हर व्यक्ति को अपना कर्तव्यबोध होना आवश्यक है। ऐसे विचार राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका वं. शांताक्काजी ने प्रस्तुत किये। 2 अक्टूबर 2017 को नागपुर में रेशीमबाग स्थित स्मृति मंदिर परिसर मैदान में आयोजित राष्ट्र सेविका समिति के विजयादशमी कार्यक्रम में वे मार्गदर्शन कर रही थीं।

आगे उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति में कर्तव्य को प्रधानता दी गई है। विजयादशमी उत्सव हमें अपनी धर्म और संस्कृति

की रक्षा करने का संदेश देता है। असुरी शक्ति का नाश करने दैवी शक्ति का जागरण होना आवश्यक है।

उन्होंने कहा, देश की अखण्डता कायम रखने हेतु सामाजिक संगठनों ने आगे आना चाहिए। जम्मू-काश्मीर में राष्ट्रीय मुस्लिम महिला मंच द्वारा किये जा रहे कार्य का उदाहरण देते हुए मा. शांताक्का जी ने बताया कि इसके परिणामस्वरूप लोगों में जिम्मेदारी जागृत हुई। मंच की महिलाएं घर-घर जाकर यह कार्य कर रहीं हैं।

लव जिहाद के जाल में बड़ी संख्या में युवतियाँ फंस रही हैं, सिर्फ केरल में ही 455 युवतियां इसमें अटकी है, नागपूर में ऐसी घटनाएं हो रही है, इस पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि मेडिकल, आई.आई.टी. के विद्यार्थी बड़ी संख्या में देश विरोधी कार्यों में जुड़े हैं ऐसा दिखाई दे रहा है, उन्हें समय पर सावधान करना है। इसके लिये देशभक्त तथा जागरूक नागरिकों ने समय देना जरूरी है। राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सामाजिक स्थैर्य को हानि पहुंचा सकने वाले रोहिंग्या मुस्लिम विस्थापितों को अपने देश में स्थान देने का मा. शांताक्का जी ने विरोध किया। आतंकवादी संगठनाओं से रोहिंग्या का कथित रूप से संबंध हो सकने की आशंका भी उन्होंने जताई।

इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की पूर्व अध्यक्षा डॉ. वर्षा ढवले थी। इन्होंने महिलाओं को स्वयं की क्षमता पहचानने का आव्हान किया। महिलाओं को सुदृढ़ आरोग्य रखने के लिए आवश्यक उपाय उन्होंने बताए। कन्या भ्रूणहत्या यह एक सामाजिक वेदना है ऐसा बताते हुए डॉ. वर्षाजी ने इसकी रोकथाम हेतु सजग रहने का भी आग्रह किया।

इस कार्यक्रम में सेविकाओं द्वारा सांघिक योग तथा अन्य प्रात्याक्षिक प्रस्तुत किये गये। समिति कार्य को 81 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में नागपूर शाखा की 81 से अधिक संख्या में अर्थात 95 सेविकाओं द्वारा आकर्षक घोषवादन किया गया।

इस समय मंच पर मा. सीता दीदी (प्रमुख कार्यवाहिका), मा. रोहिणीताई आठवले (विदर्भ प्रांत कार्यवाहिका) और मा. करूणाताई साठे (नागपूर विभाग कार्यवाहिका) थीं।

कार्यक्रम में प्रमुखता से उपस्थित थी मा. प्रमिलाताई मेढे (पूर्व प्रमुख संचालिका), मा. मनिषाताई संत (अ.भा.शा.प्र.), मा. रत्नाताई हसेगांवकर (पश्चिम क्षेत्र संपर्क प्रमुख), नागपुर महापौर मा. नंदाताई जिचकार एवं अन्य गणमान्य नागरिक बंधु-भगिनी।

पश्चिम महाराष्ट्र नासिक

पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत में सात जिलों में संचलन का आयोजन हुआ तथा एक जिले में प्रभात फेरी निकाली गई। नवरात्रि से लेकर नवम्बर तक संपन्न हुए इन संचलनों में 1727 सेविकाएं सहभागी हुई। जिनमें कुल 1100 गणवेषधारी थी। इसके अलावा अन्य सेविकाएं तथा नागरिक सहभागी हुए। सभी जगह स्थानीय नगर सेवकों ने सहयोग दिया। कुछ विशेषताएं इस प्रकार है-

नगर जिले में पहली बार संचलन का आयोजन हुआ। नगर तथा कन्हाड की सेविकाओं ने पहली बार स्वतः अभ्यास करके अपने अपने जिले का घोष गण तैयार किया। नाशिक में तालुका स्तर से भी अच्छा सहभाग रहा। वनवासी भाग से भी सेविकाएं सहभागी हुई। सभी जिलों में प्रयास कर अपने अपने जिलों में घोष का तथा समता का अभ्यास किया। संपर्क करके संचलन मार्ग पर स्वागत की अच्छी व्यवस्था की। हर जगह नागरिकों तथा बंधु वर्ग का अच्छा सहयोग रहा।

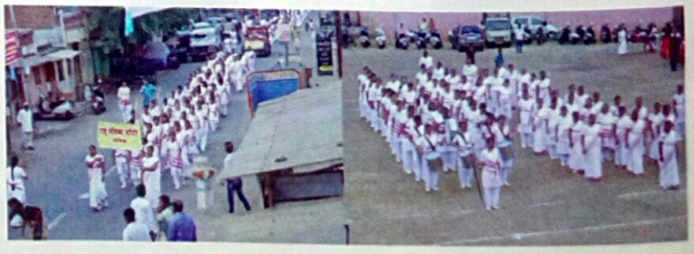

ॐ विजयादशमी वृत्त

समाचार पत्र प्रकाशन

विजयादशमी उत्सव : वनांचल जशपुर (छ.ग.)

धर्म से जोड़े प्रकृति को, करें शमी वृक्ष की रक्षा

जशपुरनगर। चर्तुनिवास प्रतिनिधि

राष्ट्रीय सेवा समिति के द्वारा विजयादशमी मनाया गया। इस अवसर पर जिला मुख्यालय में फाल्गी व्यू स्वयं सेविकाओं के द्वारा नगर में पथ संचलन किया गया। समारोह में स्वयं सेविकाओं ने शौर्य प्रदर्शन भी किया।

राष्ट्रीय स्वयं सेविका समिति की स्वयं सेविकाओं ने कल्याण आश्रम परिसर से पथ संचलन प्रारंभ किया। पथ संचलन कल्याण आश्रम से प्रारंभ होकर, जयस्तंभ चौक, जिला चिकित्सालय, महारानी चौक, बस स्टैंड होते हुए बालमहाल टेराघाई उद्यान से वापस कल्याण आश्रम पहुंची। परिसर में ध्वज प्रणाम कर एवं आरतियों से दीप प्रज्वलन कर स्वयं सेविकाओं व अतिथियों के द्वारा शस्त्र पूजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजसेवी निर्मला विश्वकर्मा विशिष्ट अतिथि राघवराज किशन की एक कार्यकारिका सपना करवरी, अंजलि महापात्रा, नीरा बरला, सोनम, कृपाप्रसाद सिंह, श्याम किशोर तिवारी थे। शस्त्र पूजा के बाद समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती निर्मला विश्वकर्मा ने कहा कि विजय दशमी एक महापर्व के रूप में हम मनाते हैं और यह पर्व हमें ऊर्जा का संचार करता है। ऊर्जा का संचार धर्म के प्रति निष्ठावान रहने व अपनी संस्कृति की रक्षा को बनाए रखने सकारात्मक रूप से है। उन्होंने कहा कि जब पांडव अज्ञातवास में गए थे तो उन्होंने शस्त्र को शमी वृक्ष के नीचे छुपाकर रखा था। जब वे लौटे तो शस्त्रों को उसी सम्मान के साथ पूजा कर धारण किया। विजय दशमी पर शस्त्र पूजा की परंपरा यहीं से प्रारंभ हुई, जिससे कई संदेश मिलते हैं। उन्होंने धर्म को प्रकृति से जोड़ते हुए कहा कि शमी के वृक्ष की पूजा उसी समय से होती है, जिससे प्रेरणा यह मिलती है कि हम वृक्ष की रक्षा करें। लेकिन आज के समय में लोग शमी के पत्तों को बड़ी मात्रा में दशहरा में तो खूब पीटते को क्षति पहुंचाते हैं और शमी के पेड़ों का दुरुपयोग कर रहे हैं। हमें शमी के पेड़ सहित सभी पौधों का संरक्षण करना चाहिए और विजय दशमी के अवसर पर संकल्प लेना चाहिए कि हम जैसे अपने जीवन को बचाने तत्पर रहते हैं और क्रिया कलाप करते हैं। ठीक उसी तरह पर्यावरण को भी बचाए रखने तत्पर रहें। रावण के अंत को उन्होंने बुराई का अंत कहा और कहा कि अपने अंदर की बुराइयों का अंत करें तो राम राज का सपना स्वयं साकार हो जाएगा। इस अवसर पर स्वयं सेविकाओं ने शारीरिक दंड प्रदर्शन योग, सूर्य नमस्कार का भी प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि एवं पथ संचलन में शामिल स्वयं सेविकाएं।

राष्ट्रीय सेवा समिति ने मनाया विजयदशमी

महाकौशल प्रांत

विजयादशमी के अवसर पर महाकौशल प्रांत के सात जिलों में पथ संचलन तथा 4 जिलों में बड़े स्तर पर प्रात्याक्षिक व उद्बोधन का कार्यक्रम लिया गया। यह वर्ष भगिनी निवेदिता जी का सार्धशती वर्ष है। इस उपलक्ष्य में 28 अक्टूबर उनके जन्मदिन के अवसर पर महाकौशल प्रांत के 11 स्थानों में प्रश्न मंच, घोष प्रात्यक्षिक, चित्रकला व भारत की निवेदिता इस विषय पर कार्यक्रम लिया गया।

"उज्जवला मंच" (हरियाणा)

समाज में गिरते जीवन मूल्य, बढ़ती प्रतिस्पर्धाओं एवं स्वार्थ के कारण विकृतियां आ रही है। उन्हें तार्किक व प्रमाणिक विधियों एवं प्रशिक्षण कार्यशालाओं के माध्यम से समाज में जन-जागरण लाने के लिये हरियाणा के प्रबुद्ध वर्ग ने उज्जवला मंच के तत्वावधान में विद्यालय एवं महाविद्यालय में कुछ कार्यक्रम किये गये। 30 मई 2017 को उज्जवला मंच की ओर से जीवन मूल्यों की सुरक्षा में महिलाओं का योगदान विषय पर संगोष्ठी ली गई जिसमें समाज में जीवन मूल्य क्या है, हमारे पूर्वजों ने जो जीवनमूल्य स्थापित किये, उनके बारे में जानकारी दी गई, किस प्रकार उस समय भी महिलाओं ने उनकी सुरक्षा हेतु प्राणोत्सर्ग किया था और वर्तमान में उन जीवन मूल्यों की सुरक्षा का दायित्व भी उनका है जिन्हें उन्हें पुनः स्थापित करना है क्योंकि वे राष्ट्र की प्राण है, इसमें लगभग 200 महिलाएं उपस्थित थीं। ऐसी ही संगोष्ठी 11.08.17 को खानपुर महिला युनिवर्सिटी हरियाणा में भी डाक्टर एवं भावी डाक्टर्स के बीच ली गई जिसमें 250 महिलाओं की भागीदारी रही। उसी दिन रक्तदान शिविर में भी सहभागिता रही, जिसमें 118 यूनिट रक्त जमा हुआ। उसमें 100 रक्तदाता लड़कियां थी। आत्महत्या प्रतिरोध मास मनाया गया जिसमें 09.07.17 को आत्महत्या से जुड़ी भ्रांतियां, कारण व निवारण विषय पर 65 शिक्षकों को जागृत किया गया।

13.09.17 को टाक के मिनट एण्ड सेव लाईफ विषय पर 300 विद्यार्थियों के साथ विचार विमर्श किया। 16.09.17 को एक विद्यालय में कार्यशाला ली गई जिसमें 210 विद्यार्थियों ने अच्छा स्पर्श एवं बुरा स्पर्श के बारे में विस्तार से बताया एवं उनके विचार को जाना। दिनांक 26.9.17 को दो विद्यालयों में जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण एवं तनाव प्रबंधन विषय पर 20 मिनट एवं सेव लाइफ विषय पर 760 तरूणियों के साथ विचार विमर्श किया गया।

तेजस्विनी स्मृति समारोह

बिलासपुर के तेजस्विनी सेवा प्रतिष्ठान एवं छात्रावास को 20 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय तेजस्विनी स्मृति समारोह 15, 16, 17 नवम्बर को विशेष उत्साह के साथ मनाया गया। इस तीन दिनों के कार्यक्रम में तेजस्विनी स्व. सुमतिताई जोशी की बहन मा. वन्दना गोखले विशेष रूप से उपस्थित थीं।

कार्तिक वद्य द्वादशी को वं. मौसीजी के स्मृति दिवस पर प्रातः श्री सूक्त द्वारा कुंकुमार्चन (अष्टभुजा को) एवं सायंकाल मा. सुलभाताई का व्याख्यान ''वं. मौसीजी - एक जीवन दर्शन'' हुआ। कार्तिक वद्य त्रयोदशी ज्ञानेश्वर महाराज समाधि दिन पर प्रातः 18 अध्याय गीतापाठ एवं सायंकाल सांस्कृतिक संध्या के रूप में कार्यक्रम था। जिसमें भूतपूर्व छात्राओं का परिचय एवं अनुभव कथन हुआ। ''इदं न मम्'' इस गीत संग्रह पुस्तिका का विमोचन मान्यवरों द्वारा किया गया। इसके पश्चात् छात्रावास की बच्चियों ने मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें भारत वन्दना, छत्तीसगढ़ी सुआनाच, गोफ पर नृत्य मटका योग, मैं छात्रावास में क्यों आई एवं हमारे तीन आदर्श पर दृश्य एवं गीत प्रस्तुत किये गये।

कार्तिक वद्य चतुर्दशी रानी लक्ष्मीबाई के जन्म दिवस पर घोष द्वारा पथ संचलन, रानी को मानवन्दना एवं भारत माता पूजन एवं प्रसाद के रूप में सहभोज हुआ। भारत माता पूजन एवं समापन कार्यक्रम वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्काजी के मार्गदर्शन के साथ संपन्न हुआ।

वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का : केरला का प्रवास वृत्त

डा. आर्या (प्रांत कार्यवाहिका)

वं. प्रमुख संचालिका मा. शान्ता आक्का जी का 1 नवम्बर से 5 नवम्बर तक केरल प्रांत में प्रवास रहा। केरल प्रांत में 4 स्थानों पर समिति कार्यक्रम संपन्न हुए।

1 नवम्बर को कोजिकोड जिले में शाखाओं का एकत्रीकरण हुआ। संख्या 296 थी।

2 नवम्बर को महानगर में कार्यकर्ता बैठक हुई, दोपहर में केरल वनवासी छात्रावास में प्रबुद्ध महिलाओं का सम्मेलन हुआ, जिसमें डॉक्टर, एडव्होकेट, शिक्षिकाएं, कॉलेज प्रोफेसर्स ऐसी प्रबुद्ध बहनों ने भाग लिया, संख्या 80 थी।

3 नवम्बर को त्रिचुर जिले में बालिका सदन की बालिका सेविकाओं का कार्यक्रम संपन्न हुआ। 5 बालिका सदन से बालिकाओं ने गणवेश में उनका स्वागत किया एवं सांघिक उत्सव हुआ।

4 नवम्बर को एर्नाकुलम जिले के शाखाओं के अलावा एडव्होकेट शाखा के लोग भी उपस्थित थे। एक कार्यक्रम भारत टूरिस्ट होम में भी हुआ। इस कार्यक्रम में 100 प्रौढ़ कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस प्रकार एडव्होकेट, डॉक्टर इनके साथ समिति की सेविकाओं का निकट से परिचय हुआ।

त्रिवेन्द्रम में भी एक शाखा कार्यक्रम एवं एक सभा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कोझीकोडा के कार्यक्रम में संघ के प्रांत प्रचारक मा. हरि किशन कुमार जी तथा एर्नाकुलम में संघ के पूर्व अ.भा. बौद्धिक प्रमुख श्री रंगा हरि जी उपस्थित थे। केरल में धीरे-धीरे समिति कार्य आगे बढ़ रहा है। न्यूज पेपर, टी.वी. चैनल आदि कार्यक्रम को प्रमुखता देकर प्रसारित कर रहे हैं। मा. शान्ता आक्का जी ने केरल प्रवास में लड़कियों के लव जिहाद एवं महिलाओं के मतान्तरण पर भी चिंता व्यक्त की। अनेक बौद्धिक में उन्होंने कहा कि हिन्दु कुटुम्ब व्यवस्था एवं हिन्दु संस्कार परिवारों में पुनः प्रतिष्ठापित करने पर ही हम इस समस्या को खत्म कर सकते हैं।

उज्जवला मंच के माध्यम से विकलांग बच्चों के बीच राष्ट्र सेविका समिति की बहनों का सेवा कार्य

राष्ट्र सेविका समिति की खण्डवा शाखा की बहनें उज्जवला मंच के माध्यम से विकलांग बच्चों में सेवा कार्य कर रही है। जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, राखी बनाने का कार्यक्रम इत्यादि सेविकाओं के सहयोग के माध्यम से चल रहे हैं।

विश्व आटिज्म दिवस 4 अप्रैल को डॉक्टर अवेयरनेस कार्यक्रम रखा गया जिसमें शहर के सभी स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स ने इन बच्चों की केयर किस प्रकार किया जाना चाहिए, यह अभिभावकों को बताया एवं बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी।

विनम्र श्रद्धांजलि : दिल्ली प्रांत (वं. उषाताई जी)

राष्ट्र सेविका समिति द्वारा दीन दयाल उपाध्याय शोध संस्थान में दिवंगत तृतीय प्रमुख संचालिका वं. उषाताई चाटी को श्रद्धांजलि दी। वं. उषाताई चाटी गत माह 17 अगस्त को पंचतत्व में विलीन हो गइ। राष्ट्र सेविका समिति दिल्ली प्रांत द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मा. शांता आक्का, अखिल भारतीय प्रमुख कार्यवाहिका सीता अन्नदानम, प्रांत प्रचारिका विजया शर्मा और वरिष्ठ केसरी क्लब की चेयर पर्सन किरण चोपड़ा व अन्य सेविकाओं ने पुष्प अर्पित करके दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर सेविकाओं ने वं. उषा ताई जी चाटी के जीवन पर आधारित अनुभवों को साझा किया।

प्रमुख संचालिका मा. शांता आक्का ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि वं. उषाताई चाटी का नाम लेने मात्र से ही शरीर और मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचरण होने लगता है। उनके पास बैठने मात्र से अगर किसी मुश्किल में होते हैं तो उन्हें उनके बारे में स्वयं पता लग जाता था और उसका वह तुरंत उपाय बता देती थी। वं. शांता आक्का ने कहा कि उन्हें कभी अपने पद का मोह नहीं रहा। बीमारी के चलते उन्होंने स्वयं अपना दायित्व वं. प्रमिलाताई जी को सौंप दिया था।

:: विनम्र श्रद्धांजलि ::

वं. उषाताईजी श्रद्धांजली कार्यक्रम वृत्त

मा. मोहन भागवत जी: वं. उषाताई जी से 5 मिनट बात करने वाले को भी उनसे निकटता महसूस होती थी। उनके वात्सल्य के कारण कोई संकोच नहीं रहता था। आत्मीयता आधारित कार्य उन्होंने किया। समिति का कार्य जिनको देखकर समझ आए ऐसी उषाताई जी थी। मेरी माँ की मृत्यु हुई तब मैं प्रवास में था, तब मुझे स्वयं आकर सांत्वना दी। भारतीय महिलाओं में वात्सल्य यह प्रमुख भाव नहीं, अपितु वृत्ती होनी चाहिए। उनके स्वयं के बारे में कोई जानकारी उनसे नहीं मिलती थी। प्रकाश देते रहना किंतु दिखना नहीं, ऐसी आत्मविलोपी वृत्ती उनकी विशेषता थी। यह साधारण बात नहीं, समर्पण भाव से यह आती है। उनके अंतिम बीमारी में भी इस बात का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। जिस तत्व की साधना करते हैं उसका जीवंत उदाहरण वं. उषाताई जी थी। ऐसे महिला-पुरूष कार्यकर्ता कैसे तैयार होते हैं ? लोग पूछते हैं कि क्या Process है, क्या Methodology है ? ऐसी कोई प्रणाली संघ के पास नहीं। ऐसे किसी प्रणाली से नहीं तो स्वयं को ही अग्रसर होते हुए वैसे बनना पड़ता है। साधना की सिद्धि होने तक यह प्रयास निरंतर करने पड़ते हैं ऐसा स्पष्ट विचार वं. पू. सरसंघचालक मा. मोहन जी भागवत ने दिवंगत वं. उषाताई जी चाटी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए रखे। मा. उषाताई जी में चिंतन, स्मरण, पवित्रता, आनंद उस प्रकार की शक्ति कैसे आयी होगी, इसका विचार करें। अपने आप को पीछे रखने की उनकी वृत्ती को आत्मसात करें। उनका कृतित्व अमर है, वर्धिष्णु है, उसे अपने जीवन में उतारते रहे। उन्होंने दिये हुए सादगी, पवित्रता के पाथेय का चिरकाल स्मरण रहे, शक्ति मिले यही प्रार्थना।

मा. शान्ताक्का जी : अंधःकार दूर करने वाली, प्रकाश की सूचना देने वाली उषा जैसी थी उषाताई जी। सकारात्मक विचार और प्रेरणा उन्होंने दी। संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति के मन से नैराश्य का अंधःकार मिटाती थीं। अपने परिवार को भी उन्होंने एक संघ रखा। विद्यालय जहां उन्होंने शिक्षिका का दायित्व निभाया, वहां भी सकारात्मक वातावरण निर्माण किया। सहकारी शिक्षिकाओं को एक-दूसरे के अच्छे गुणों का अवलोकन करने वह कहती थी। कार्यकर्ता के मन को भी समझती थी। कार्य के लिए प्रवास में जाती थी तो वहां के स्थान विशेषता का अध्ययन करती थी। बंगलुरू में भी महाविद्यालय तरूणियों को कैरियर के बारे में पूछे गये सवालों पर उचित मार्गदर्शन किया था, ऐसी राह मा. शांताक्का जी ने बतायी। समय नियोजन करने से हम सभी अधिक समय तक कार्य कर सकते हैं। ऐसा भी उनका कहना रहता था। पूर्वांचल प्रवास में अनेक बाधाएं आने के बाद भी धैर्य रखकर उनका सामना किया। प्रमुख संचालिका का दायित्व त्यागने के बाद पूरी तरह से उस पद से वे निवृत्त हुईं, यह एक महामाता का आदर्श है। निवृत्त जीवन आनंद से बिताया।

डॉ. उदय चाटी : हमारी चाची इतने बड़े संगठन का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व निभा रही हैं। यह देखकर हम सभी परिवारजनों को गर्व होता था। अच्छी शिक्षा और संस्कार उन्होंने हमें दिये। स्व. सावरकरजी ने जैसे कहा था - अनेक फुले फूलती....। कई फूल खिलते हैं और मुरझाकर फेंक दिये जाते हैं, लेकिन कुछ फूल ऐसे भी रहते हैं जिन्हें श्री चरणों में चढ़ने का भाग्य मिलता है, उषाकाकू (चाची) ऐसी ही भाग्यवान थी। जिनकी समर्पिता वृत्ती से सभी उनसे जुड़े रहते थे।

पु. जितेन्द्र नाथ महाराज (श्री देवनाथ पीठाधीश्वर, अंजनगांव-सुर्जी) : वं. उषाताई जी वटवृक्ष के समान सभी को ममत्व की छाया देने वाली थी। बोलने से ज्यादा प्रत्यक्ष कृति द्वारा उन्होंने अपना आदर्श स्थापित किया। समाज के अनेकों यशवंत व्यक्तियों की वह सच्ची शक्ति और प्रेरणास्त्रोत थीं।

इस कार्यक्रम का (24 अगस्त 17) प्रास्ताविक मा. चित्राताई जोशी (अ.भा.सहकार्यवाहिका) ने किया।

कई मान्यवर व्यक्ति/संस्था जैसे **मा. नितीनजी गडकरी, मा. सुमित्राताई महाजन, मा. मृदुला सिन्हा, मा. देवेन्द्र जी फडणवीस (मुख्यमंत्री), स्वातंत्र्यवीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक मुंबई** द्वारा भेजे गये शोक संदेश का वाचन किया।

बड़ी संख्या में विविध संगठन और संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा वं. उषाताई जी की प्रतिमा के सम्मुख श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। दे.अ.म. में हुए इस कार्यक्रम में पूर्व प्रमुख संचालिका **मा. प्रमिलाताई जी मेढ़े, मा. सीताक्का जी, साध्वी ऋतंभरा देवी प्रमुखता** से उपस्थित थे।

:: विनम्र श्रद्धांजलि ::

स्व. मा. प्रतिभाताई भावे

इस वर्ष मार्गदर्शक श्रेष्ठ सेविकाओं के निधन से समिति की जो क्षति हुई है उनमें से एक प्रतिभावान श्रेष्ठ सेविका स्व.मा. प्रतिभाताई भावे हैं। एक ऐसी श्रेष्ठ सेविका जिन्होंने समिति की स्थापना शाखा से तीन पीढ़ियों का कार्य होते देखा है। मा. प्रतिभाताई पूर्व आश्रम की इन्दुताई वरदडकर इस नाम से जानी जाती थी। पू. गुरूजी की योजना से पंजाब के प्रचारक श्री दामोदर राव भावे के साथ उनका विवाह हुआ और वे भावे परिवार में आईं।

शादी के पूर्व उनके पिताजी कृष्णराव वरदडकर जी की तीन शर्तें थी क्योंकि इन्दु की भी यही शर्त थी - 1. शादी के बाद नौकरी करने दी जाए। 2. समिति कार्य करने की छूट हो। 3. दहेज न ले। भावे परिवार को ये तीनों शर्तें मान्य थी। इन्दुताई जी ने घर-परिवार एवं नौकरी करते हुए भी समिति का कार्य कुशलता पूर्वक संभाला। किसी ने उनसे पूछा कि आप समिति कार्य क्यों करती हैं, तब उन्होंने ''पुण्य पावन ध्येय साधन क्या नहीं यह सार्थ जीवन'' इस गीत के माध्यम से दिया। उनका यह गीत वं. मौसीजी को अत्यंत प्रिय था। संस्कृत यह आपका प्रिय विषय रहा। वाचन मनन चिंतन एवं अपार बौद्धिक क्षमता के कारण वं. मौसीजी ने उन्हें शिक्षा का क्षेत्र दिया। आपने 42 वर्षों तक न.पा. देवस्मृति लोकांची शाला में शिक्षिका के रूप में संस्कृत एवं मराठी का विषय लेती थी। अतः भारतीय श्री विद्या निकेतन स्त्री शिक्षण प्रकल्प की संस्थापिका अध्यक्ष के रूप में गुरूतर दायित्व दिया। आप संस्कृत मूलाक्षर तरवा चित्रमय संस्कृत वर्णमाला तैयार करने वाली जागतिक प्रथम महिला थी।

आद्य शंकराचार्य ''जीवन एवं कार्य'' एवं रामायण पर गहरा अध्ययन था। आपके इन विषयों पर व्याख्यान भी हुए। आप अनुशासन प्रिय सेविका एवं शिक्षिका के रूप में जानी जाती थी। उनके पुत्र ने उन्हें संस्कृत श्लोक में ही श्रद्धासुमन अर्पित किये।

प्रज्ञा संस्कृत वागलंकृत वरा, वात्सल्य वस्त्रावृत्ता
त्रिस्त धीर सुबुद्धिरमला, मेधाभिभूताः यया
भास्वतेज इव मिताब्धि विरलं, ज्ञानं हि यस्याः वरम।
सद्भावेन नमामि पादकमलेऽहं प्रतिभेयस्तव।

मा. शकुनताई जी वराडपाण्डे

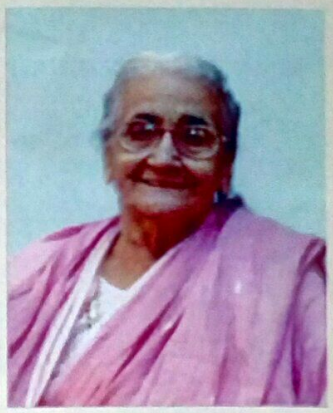

एक संघर्षरत जीवन जीने वाली दीर्घकाल तक निष्ठा से समिति का कार्य करने वाली वह्राड प्रांत की पूर्व कार्यवाहिका हमारे बीच नहीं रही। अपने पुत्र एवं पुत्रियों को समिति एवं संघ कार्य के संस्कार देकर राष्ट्र कार्य के लिये प्रेरित करने वाली समाज एवं पारिवारिक कार्य में संतुलन बनाकर सदैव समिति कार्य के लिये तत्पर रहती थी।

समर्थ रामदास की उक्ति, 'आधी प्रपंच करावा नेटका,
मग जावे परमार्थ विवेका, येथे आळस करू नका विवेकी हो।

शुकनताई ने सद्-सद् विवेक बुद्धि से इस उक्ति को अपने जीवन में चरितार्थ किया। संघर्षरत पारिवारिक जीवन में भी वे सदैव सबका मधुर मुस्कान के साथ स्वागत करती थी। अपने अंतिम क्षणों में विस्मृति के बावजूद आने वाली सेविका का मुस्कुराकर स्वागत करती थी मानो उन्होंने उसे पहचान लिया हो। सेविका को भी मिलने का समाधान मिलता। ऐसी शकुनताई आज हमारे बीच नहीं है फिर भी उनके इस मधुर स्वभाव की प्रेरणा हमें सदैव मिलती रहेगी। उन्हें हम सबकी ओर से भाव सुमनांजलि अर्पित करते हैं।

स्व. श्री रमेश प्रकाश जी

श्रीमती आशा शर्मा जी (पूर्व सहकार्यवाहिका रा.से.समिति) के पति श्री रमेश प्रकाश जी का देहावसान 21 नवम्बर को दिल्ली में हो गया। आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ दिल्ली के पूर्व क्षेत्रीय कार्यवाहक एवं दिल्ली प्रांत के माननीय संघचालक थे। राष्ट्र सेविका समिति की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

प्रिंटेड मेटर — बुक-पोस्ट

नाम .....

पता .....

.....

.....

पिनकोड ..... मो. .....